8. स्वराज्य की नींव

लेखक - विष्णु प्रभाकर

I. उन्मुखीकरण प्रश्न :

प्र.1. शासक को विपत्ति की हालत में कैसे काम लेना चाहिए?

उ. शासक को विपत्ति की हालत में धैर्य और संयम स्फूर्ति स काम लेना चाहिए।

प्र.2. आपकी नज़र में आदर्श शासक के लक्षण क्या हो सकते है ?

उ. मेरी नज़र में तो आदर्श शासक का लक्षण यह है कि उसमें अधिकार में क्षमा गुण होना चाहिए।

प्र.3. सुव्यवस्थित शासन के गुण क्या हो सकते हैं?

उ. **सुव्यवस्थित शासन के गुण :**

1. सबका बराबर ध्यान रखना चाहिए।
2. विपत्ति की हालत में धैर्य और समय स्फूर्ति से काम लेना चाहिए।
3. कानून और नियमों का समान रूप से अनुसरण करना चाहिए।

इसी के साथ अधिकार में क्षमा का गुण भी रखना चाहिए।

उद्देश्य :

छात्रों को साहित्य में एकांकी विधा से परिचित कराना, एकांकी की भाषा व रचना शैली से अवगत कराना और एकांकी लेखन के लिए प्रोत्साहित करना एवं इसके साथ-साथ छात्रों में देश के लिए समर्पित होने की भावना का विकास करना इसका उद्देश्य है।

लेखक परिचयः

विष्णु प्रभाकर का जन्म सन् 1912 में हुआ। वे आदर्शप्रिय व्यक्ति थे। इन्हें प्रेमचंद परंपरा का 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी' लेखक कहा जाता है। 'आवारा मसीहा' नामक रचना पर इन्हें 'सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार ने इन्हें ' पदम भूषण' सम्मान से सम्मानित किया है।

विधा विशेष :

एकांकी साहित्य की वह विधा है, जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित हैं।

एकांकी का अर्थ है - एक अंक वाला। एकांकी में किसी एक ही समस्या को बताया जाता है। यह एक ऐतिहासिक घटना प्रधान एकांकी है।

II. शब्दार्थ :

1. नींव = बुनियाद, मूलाधार
2. मर्दानी = साहसी (पुरुष जैसा साहस रखने वाली
3. तंबू = खेमा, डेरा
4. थपेड = धक्का, ठोकर
5. जूझना = लड़ना
6. नाविक = मल्लाह, केवट
7. मशगूल = कार्यरत, काम में लगा हुआ
8. तथ्य = सत्य, वास्तविकता
9. मतलब = अर्थ
10. दुत्कार = तिरस्कार
11. कचोट = चुभना
12. झंकार = पायल की ध्वनि
13. झनक उठना = झन झनाहट
14. कूच = रवानगी
15. चाटुकार = चापलूसी करनेवाला
16. जागीर = राजा की ओर से पुरस्कार में दी गई ज़मीन
17. नूपुर = घुँघरु
18. कलंक = निंदा, बदनामी

III. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. लक्ष्मीबाई किससे बातें कर रही हैं?

उ. लक्ष्मीबाई अपनी सहेली कर्नल जूही से बातें कर रही हैं।

प्र.2. उन्हें किस बात की चिंता सता रही है?

उ. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। लेकिन धीरे-धीरे झाँसी कालपी, ग्वालियर उनके हाथो से जा रहें थे अंग्रेजों का शिकंजा मजबूत हो रहा था। उसे कैसे रोके यही चिंता उन्हें सता रही थी और रानी के सेना नायक ऐशो आराम में मशगुल थे।

प्र.3. लक्ष्मी बाई तात्या से क्यों नाराज थीं? तात्या ने उन्हें क्या आश्वासन दिया?

उ. तात्या टोपे झाँसी के सेनापति थे। वे वीर एवं रघुनाथराव के स्वामीभक्त सेवक थे। रघुनाथराव जो झाँसी (राज्य) के प्रतिनिधि थे वो विलासिता, ऐशोआराम में डूबे थे। लक्ष्मीबाई तात्या से नाराज थी। स्वराज्य की रक्षा के लिए डट कर अंग्रेजी फ़ौज से लड़ेंगे और स्वतंत्रता की रक्षा करेंगे। यही आश्वासन तात्या ने लक्ष्मीबाई को दिया।

प्र.4. लक्ष्मीबाई साहसी नारी थीं? उदाहरण कें द्वारा सिद्ध कीजिए।

उ. लक्ष्मीबाई साहसी नारी थीं। झाँसी के नवाब, सेनापति सरदार सब ऐशो आराम में मशगूल थे परंतु रानी अपने राज्य को बचाने की हर एक कोशिश कर रही थी।

रानी ने महिला सैनिकों को इकट्ठा करके युद्ध की तैयारी की थी। रानी कहती है कि हम सब मिलकर तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे।

इन कथनों से सिद्ध होता है कि लक्ष्मीबाई साहसी थी।

अर्थग्राहयता - प्रतिक्रिया :

अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1. मार्ग में हिमालय के अड़ने, डरावनी लहरों के थपेड़े मारने, नाविकों के सो जाने से क्या अभिप्राय है?

उ. झाँसी रानी लक्ष्मीबाई के अधिकार में थी परन्तु अंग्रेज उसे छीनने के प्रयत्न कर रहे थे। रानी के सामने हिमालय की तरह रुकावटें खडी थी। युद्ध भूमि से आने वाली खबरें डरावनी लहरों के थपेड़े जैसी थी। झाँसी की रक्षा करना कठिन हो गया। उसकी रक्षा करने का आश्वासन (भरोसा) देने वाले रावसाहेब एवं तात्या टोपे ऐसे नाविक थे जो विलासिता में व्यस्त थे। अर्थात जिन पर झाँसी की रक्षा की जिम्मेदारी थी वही गैरजिम्मेदार हो गए।

प्र.2. यह एकांकी सुनने के बाद उस समय की किन परिस्थितियों का पता चलता है?

उ. यह एकांकी सुनने के बाद उस समय की परिस्थितियों के बारे में यह पता चलता है कि भारत के विभिन्न राज्यों में राजाओं में एकता नही थी। वे विलासिता में डूबे थे। राज्य के प्रति लापरवाह थे। उस समय की गंभीर स्थिति को समझने में वे असफल थे। वे रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं एवं देशभक्तों को सही समय पर सही दिशा में साथ नहीं दे रहे थे।

आ. पाठ पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1. तात्या कौन थे?

उ. तात्या सरदार थे। वे रावसाहब को अपने तन-मन के स्वामी मानते थे। सेनापति होने के नाते उनपर बहुत सारी जिम्मेदारियाँ थी।

प्र.2. बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से क्या कहा था?

उ. बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से कहा था कि ''जब तक हमारे समाज में छुआछूत और ऊँच-नीच का भेद नहीं मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोड़कर जनसेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।''

प्र.3. रानी लक्ष्मीबाई ने क्या प्रतिज्ञा की थी?

उ. रानी लक्ष्मीबाई ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।

प्र.4. जूही तात्या का पक्ष क्यों लेती है?

उ. जूही तात्या को अपना स्वामी मानतो है। इसलिए जूही तात्या का पक्ष लेती है।

इ. पाठ के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए।

1. स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थपना के लिए भूमि तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पत्थर बनना।

उ. यह वाक्य जूही लक्ष्मीबाई से कहती है। जो कभी बाबा गंगादास ने उन्हें कहा था।

स्वराज्य प्राप्त करने में पूरी तरह से समर्थ ना भी हो तो स्वराज्य की लड़ाई में भाग लेकर मर मिट कर अन्य देश भक्तों को स्पूर्ति देने के लिए नींव का पत्थर तो बन ही सकते हैं। जिससे देशभक्तों में देशभाक्ति की भावना प्रबल होगी। यही इसका आशय है।

प्र.2. शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झलक उठेगी।

उ. यह वाक्य मुंदर, लक्ष्मीबाई और जूही से कहती है। उसके कहने का तात्पर्य यह है कि लक्ष्मीबाई अगर सेनापति, नवाब, सरदार, रावसाहेब इन्हें शंका की नज़र से देखेंगी तो उनमें अविश्वास बढेगा और अविश्वास के बढ़ने से वो निराशा में डूबेंगे तथा निराशा को दूर करने के लिए नृत्य, विलासिता का सहारा लेंगे। अर्थात निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार झलक उठेगी। यही इस वाक्य का आशय है।

ई. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

गद्यांश ..... टेक्स्ट बुक नं. 48

IV. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. यहाँ किसके बारे में बताया गया है?

उ. महिलाओं तथा उनके अधिकारों के बारे में बताया गया है।

प्र.2. अनुच्छेद 15(1) में क्या बताया गया है?

उ. अनुच्छेद 15(1) में यह बताया गया कि राज्य द्वारा कोई भेद-भाव नहीं करना है।

प्र.3. किस अनुच्छेद के अनुसार महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन की बात कही गयी है?

उ. अनुच्छेद 39(घ) में महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन की बात कही गयी है।

V. अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

प्र.1. एकांकी के आधार पर बताइए कि 'स्वराज्य की नींव' का क्या तात्पर्य है?

उ.स्वराज्य प्राप्त करना उत्तम है। स्वराज्य प्राप्त करने में पूरी तरह समर्थ नही है फिर भी कोशिश कर रहे हैं और देशभक्ति में मर मिट रहे है। इससे दूसरे वीर देशभक्तों के सामने एक मिसाल कायम हो रही है और देशभक्तों को इससे प्रेरणा, स्फूर्ति मिलेगी और वे भी देश के लिए स्वराज्य के लिए आगे आयेंगे। यही 'स्वराज्यकी नींव' का तात्पर्य है।

प्र.2. महारानी लक्ष्मीबाई का कौनसा कथन तुम्हें अच्छा लगा ? क्यों?

उ.''नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो।'' महारानी लक्ष्मीबाई का यह कथन मुझे अच्छा लगा। क्योंकि वह स्वराज्य-प्राप्ति के युद्ध का समय था। उस समय विलासिता में मशगूल रहने का समय नहीं होता। युद्ध के लिए तत्पर रहना चाहिए। नूपुरों की झंकार ऐशो आराम विलासिता का प्रतीक है और तोपों का गर्जन भीषण युद्ध का प्रतीक है। समय आचुका था जहाँ नूपुरों की जगह तोपों की आवाज सुनाई देनी चाहिए थी।

आ. वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भुत मिसाल थीं? स्पष्ट कीजिए।

उ.

लक्ष्मीबाई ने सच्चे अर्थों में देश की स्वतंत्रता की नींव रखी थी। वह झाँसी को स्वतंत्रता तथा स्वराज्य दिलाने के लिए अंग्रेजी सरकार से बड़ी वीरता के साथ युध्दकरती है। नारी सेना को तैयार करती है। वह झाँसी, कालपी और ग्वालियर के लिए अंग्रेजों से लडती है।

वह नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन सुनना चाहती है। सीधे युद्ध भूमि में जाते समय, अंत में कहती हैं कि स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। वे सचमुच देशभक्ति एवं राष्ट्र प्रेम की एक अद्भुत मिसाल थीं। इनकी वीरता एक पंक्ति में कहे तो इस तरह होगी ''खूब लडी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।''

इ. 'स्वराज्य की नींव' एकांकी को अपने शब्दों में कहानी के रूप में लिखिए।

उ. भारत के इतिहास में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम और उनका बलिदान हमेशा अजर-अमर रहेंगा। झाँसी राज्य का पालन रानी लक्ष्मीबाई कर रही थी।

उस समय परिस्थितियाँ इस तरह थी कि भारत के अनेक राज्यों में अलग अलग राजा राज्य कर रहे थे। दु:ख की बात यह थी कि राजाओं में आपस में एकता नहीं थी। अंग्रेज भारत में आकर धीरे-धीरे राजाओं को आपस में लड़ाकर राज्यों पर भी आक्रमणकर राज्यों को अपने अधिकार में ले रहे थे।

रानी लक्ष्मीबाई इन सब बातों को भली भांति जानती थी। वह चाहती थी कि सब लोग जाग्रत रहें। रानी ने हर कोशिश की। यहाँ तक की महिला सैनिकों की फौज तैयार की। तात्या असावधान थे किंतु बाद में उन्होंने फाज को से प्रशसनीय कार्य किया। रानी नवाब, सरदार आदि के बेखबर रहने से उनके ऐशोआराम और विलासिता में मशगूल रहने से नाराज थी। वह चाहती थी कि नूपुरों की जगह तोपों की आवाज सुनायी दे।

रानी ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। अकेली ही सही रानी आखिर तक लडती रही। लक्ष्मीबाई को लगता था कि अब समय स्वामीभक्ति का नही देशभक्ति करने का था। स्वराज्य के लिए रणभूमि में मौत से जूझना है।

जब रानी को पता चलता है कि रोज अंग्रेज जनरल लड़ने के लिए सिद्ध हो चुका है तो रानी लक्ष्मीबाई भी युद्धभूमि में जाने के लिए तैयार होती है। वह कहती है कि हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे।

ई. साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के महत्व पर दो-दो वाक्य लिखिए।

उ. साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता ये सभी एकदूसरे से जुड़े है।

मानव जीवन में इनका बड़ा महत्व है।

साहस :

* बिना साहस के कठिन कार्य आसान नही होता।
* साहस होने पर ही सही समय पर निर्णय लिया जाता है।

वीरता :

* जहाँ साहस होता है वहाँ वीरता अपनेआप ही होती है।
* वीरता के लिए बलिदान भी करना पड़ता है।

आत्मविश्वास :

* इन्सान में आत्मविश्वास हो तो वो पहाड़ भी लांघ सकता है।
* आत्मविश्वास के साथ किये कार्य सफल होते हैं।

आत्मनिर्भरता :

* आत्मविश्वास तभी होता है जब इन्सान में आत्मनिर्भरता होती है।
* आत्मनिर्भरता होने पर हम कोई भी काय करने से नही डगमगाते।

VI भाषा की बात :

अ. सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. नारी, मित्र, प्रेम (वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए)

1. नारी = औरत, अंगना, रमणी, ललना, वनिता

   वाक्य : नारी सिर्फ अबला नही वह वीरांगना भी है।

2. मित्र = दोस्त, सखा, मीत, संगी, सहचर, साथी

   वाक्य : कष्ट में साथ देने वाला ही सच्चा मित्र है।

3. प्रेम = अनुराग, प्रीति, प्यार, स्नेह।

   वाक्य : मैं अपने देश से बहुत प्रेम करता हूँ।

sakshieducation.com

2. असफलता, विश्वास (विलोम शब्द लिखिए / वाक्य प्रयोग कीजिए)

1. *असफलता × सफलता*

   वाक्य : जीवन में असफलता मिलने पर निराश न हाकर सफलता के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

2. *विश्वास × अविश्वास*

   वाक्य : विश्वास के साथ किया गया कार्य सफल होता है तो अविश्वास से असफलता मिलती है।

3. शंका, किला, सूचना (वचन बदलिए / वाक्य प्रयोग कीजिए)

1. *शंका - शंकाएँ*

   वाक्य : अंधेरे में बहुत सारी शंकाएं मन में उभरती है।

2. *किला - किल*

   वाक्य : शिवाजी ने अनेक किले हस्तगत किये।

3. सूचना - सूचनाएँ

   वाक्य : प्रश्न पत्र की सूचनाएँ पढ़ कर उत्तर लिखना चाहिए।

आ. सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. स्वराज्य, निराशा(उपसर्ग पहचानिए)

उ. स्वराज्य - 'स्व', निराशा - 'निर्'

2. वीरता, ऐतिहासिक (प्रत्यय पहचानिए)

उ. वीरता - वीर + 'ता' (प्रत्यय), ऐतिहासिक - इतिहास + 'इक' (प्रत्यय)

sakshieducation.com

इ. उदाहरण देखिए। उसके अनुसार वाक्य बदलिए।

उदाः राजू पुस्तक पढ़ता है। - राजू से पुस्तक पढ़ी जाती है।

1. लड़का भोजन करता है। - लडके से भोजन किया जाता है।

2. i. रानी ने आज्ञा दी। - रानी से आज्ञा दी गई। ii . रानी के द्वारा आज्ञा दी गई।

3. लक्ष्मीबाई ने जूही से कहा। - लक्ष्मीबाई के द्वारा जूही को कहा गया।

ई. रेखांकित शब्द के स्थान पर नीचे दिये गये एक-एक शब्द का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

कक्षा में एक लड़का आया।

सब लड़के कक्षा में पहुँच चुके थे।

लड़कों में अनुशासन बना था।

1. लड़की 2. छात्र 3. छात्रा 4. बालक 5. बालिका

1. लड़की

1. कक्षा में एक लड़की आयी।
2. सब लड़कियाँ कक्षा में पहुँच चुकी थी।
3. लडकियों में अनुशासन बना था।

2. छात्र

1. कक्षा में एक छात्र आया।
2. सब छात्र कक्षा में पहुँच चुके थे।
3. छात्रों में अनुशासन बना था।

Sakshieducation.com

3. छात्रा

1. कक्षा में एक छात्रा आयी।
2. सब छात्राएँ कक्षा में पहुँच चुकी थी।
3. छात्राओं में अनुशासन बना था।

4. बालक

1. कक्षा में एक बालक आया।
2. सब बालक कक्षा में पहुँच चुके थे।
3. बालकों में अनुशासन बना था।

5. बालिका

1. कक्षा में एक बालिका आयी।
2. सब बालिकाएँ कक्षा में पहुँच चुकी थी।
3. बालिकाओं में अनुशासन बना था।

*****

sakshieducation.com